करकण्डू जाग गया

उन दिनों चम्पानगरी पर राजा दधिवाहन का राज्य था। उनकी रानी पद्मावती वैशाली गणतंत्र के अध्यक्ष चेटक की पुत्री थी। वह उन दिनों गर्भवती थी। एक दिन दधिवाहन रानी पद्मावती के महल में आये। रानी का उदास मुख देखकर उन्होंने पूछा–

क्या बात है प्रिये, इस वर्षा ऋतु में तो समूची प्रकृति हरी-भरी हो रही है परन्तु आप मुरझाई चम्पक लता की तरह पीली पड़ती जा रही हैं.....

महाराज, कुछ दिनों से मुझे एक विचित्र इच्छा उत्पन्न हुई है परन्तु.....

परन्तु क्या प्रिये, क्या आपको लगता है कि हम आपकी इच्छा पूरी नहीं कर सकेंगे।

नहीं महाराज, कुछ इच्छायें ऐसी अटपटी होती हैं कि बताने में भी शर्म आती है।

महारानी, आप निःसंकोच अपने मन की बात कहिये। आपकी हर सम्भव इच्छा को हम पूर्ण करेंगे।

रानी ने अपनी इच्छा राजा को बता दी।

अगले ही दिन राजा दधिवाहन ने रानी की इच्छा-पूर्ति का बन्दोबस्त कर दिया। रानी पद्मावती ने महाराज दधिवाहन की राजसी पोशाक धारण की, सिर पर राजमुकुट, कमर में तलवार लटकाकर बड़े रोबीले ढंग से रानी हाथी पर बैठी। पीछे छत्र हाथ में लेकर राजा स्वयं बैठे और उनके पीछे सैकड़ों घुड़सवार सैनिक चलने लगे। नगर के राजमार्गों पर हजारों लोग रानी को विचित्र वेशभूषा में देखकर विस्मय के साथ बधाइयाँ देने लगे और फूल बरसाने लगे।

नगर की संभ्रान्त महिलाएँ राजा-रानी के इस मधुर प्रेम की चर्चा करने लगीं–

देखो, अपने महाराज रानी को कितना दिलोज़ान से प्रेम करते हैं।

हाँ, रानी की इच्छाओं का कितना सम्मान करते हैं....

नगर जनों का अभिवादन स्वीकारती हुई रानी की सवारी नगर के बाहर उद्यान की ओर बढ़ने लगी। तभी रिमझिम फुहारें पड़ने लगीं। राजा ने कहा–
महारानी, देखो आपकी इच्छा पूर्ण करने के लिए वरुण देव भी प्रसन्न होकर रिमझिम फुहारें बरसा रहे हैं। पवन देव ठंडी हवा का पंखा झल रहे हैं। हुई न आपकी इच्छा पूर्ण!
आप जैसा स्वामी मिला है तो इच्छाएँ पूरी क्यों नहीं होंगी, महाराज!
मधुर वार्तालाप के साथ उनकी सवारी आगे बढ़ती जा रही थी।

अचानक उनका हाथी तेज दौड़ने लगा। महावत ने अंकुश लगाया किन्तु फिर भी वह नहीं रुका। पागल-सा तेज दौड़ता रहा। तब महावत घबराकर चिल्लाया–
महाराज, लगता है ठंडी हवाओं और मौसम की मदमस्ती के कारण हाथी पागल हो गया है। जरा सावधान रहें।
चीं··हं··हं